PRACTICES	HYL/CUCUMBER (SISCO TOKYO TITAN)												
Field Sanitation	Remove residues of previous crops, weeds, old vines and diseased/damaged plant material before sowing. Keep the boundries of field clean to reduce pest and disease carry-over.	**खेत की सफाई**	बुवाई से पहले पिछली फसल के अवशेष, खरपतवार, पुरानी बेलें और रोगग्रस्त/क्षतिग्रस्त पौधों को हटा दें। कीट और रोगों के प्रसार को कम करने के लिए खेत की सीमाओं को साफ रखें।	**पौधशाला प्रबन्धन**	नर्सरी ट्रेयों को साफ-सुथरे माध्यम से भरें, कवकनाशी उपचार करें और पौधों को रोगमुक्त रखने के लिए नियमित निगरानी करें।	**पौध रोपण**	पौधों को रोपाई से पहले कवकनाशी घोल में डुबोएँ, उचित दूरी और गहराई सुनिश्चित करें और रोपाई के तुरंत बाद सिंचाई करें।	**हाथ से तोड़ाई**	तोड़ाई सही समय पर करें ताकि फल कड़े न हों। फलों को धीरे से तोड़ें ताकि बेलें क्षतिग्रस्त न हों।	**मिट्टी की तैयारी**	मिट्टी को ढीला, उपजाऊ और जल निकासी वाला बनाएँ। जैविक पदार्थ मिलाएँ।	**मिट्टी का स्वास्थ्य**	मिट्टी को हल्का, उपजाऊ और अच्छी जल निकासी वाला बनाए रखें। जैविक खाद और हरी खाद का प्रयोग करें।
Soil requirement	Sandy loam to loam soil, well-drained, fertile, with good organic matter. Ideal pH range: around 6.0-7.0. Avoid waterlogging, as Cucumber is sensitive to excess moisture.	**मिट्टी की आवश्यकता**	बलुई दोमट से दोमट मिट्टी, अच्छी जल निकासी वाली, उपजाऊ और पर्याप्त जैविक पदार्थ युक्त। आदर्श पीएच सीमा: लगभग 6.0-7.0। जलभराव से बचें, क्योंकि खीरा अधिक नमी के प्रति संवेदनशील होता है।	**नर्सरी प्रबंधन**	रेतला लोमी लोम फार्मेन, अच्छी तरह से बुवाई किलोरोसी, प्रतिकूल, बहुत कार्बनिक पदार्थोंवाली. पहले की pH-श्रेणी: लगभग 6.0-7.0. पहली कल्याण्ड्स लगी, क्योंकि ककड़ी अधिक नमी के प्रति संवेदनशील होता है।	**पौधरोपण**	बीज को रोपण से पहले कवकनाशी घोल में डुबोएँ, उचित दूरी और गहराई सुनिश्चित करें और रोपण के तुरंत बाद सिंचाई करें।	**खाद प्रबंधन**	खाद की मात्रा मिट्टी परीक्षण के आधार पर निर्धारित करें। जैविक खाद और हरी खाद का प्रयोग करें।	**खेत की सफाई**	खेत को साफ रखें, खरपतवार निकालें और पुराने पौधों को हटाकर रोग और कीट के प्रसार को कम करें।
Soil Testing	Conduct soil testing at least once every 2-3 years for EC, pH, OC, and macro-micro nutrients, and apply fertilizers based on test results.	**मृदा परीक्षण**	मिट्टी की ईसी, पीएच, ओसी और सूक्ष्म-स्थूल पोषक तत्वों की जांच कम से कम हर 2-3 साल में एक बार करें और और परीक्षण परिणामों के आधार पर उर्वरक डालें।	**मृदी परीक्षण**	EC, pH, OC नमूने मिलान एनपी EC, pH, OC आदि स्थूल-सूक्ष्म पोषक तत्वाओं सही परीक्षण करा आदि परीक्षणाओं के मिलनेवाले आधे साल में एक बार।	**मृदा परीक्षण**	मृदा परीक्षण के आधार पर उर्वरक डालें।	**मृदा परीक्षण**	मृदा परीक्षण कराएँ।	**मृदा परीक्षण**	मृदा परीक्षण कराएँ।
Climate Suitability	Climate / Weather Requirement: Temperature: Optimum 25 – 35 °C. Rainfall: 120-150 mm is suitable for the crop. Sowing temperature: 22-38 °C	**जलवायु/मौसम संबंधी आवश्यकताएँ.** तापमान: 25-35 डिग्री सेल्सियस इष्टतम। वर्षा: लगभग 8 मिमी 120-150 मिमी उपयुक्त है। बुवाई का तापमान: 22-30 डिग्री सेल्सियस।	**मौसमीय मौसम**	मध्यमेत्तम / हल्यानमनी मध्यमाकाल: तापमान: बीच 25 – 35 °C. मध्यमेत्त: 120-150 मीमी भले बड़े काम के लीज़ है. बोवाई तापमान: 22-30 °C	**इष्टतम अनुकूलन**	हल्ककामनी आवश्यकता: तापमान: आदर्श 24 – 34°C. वाजब: निकासी 12++1++ मिमी पर्याप्तमात्रा सीमा आई. पेरणीकी तापमान: 22-34°C.	**मौसमीय परिस्थितियाँ**	कालुमिलन / वातमनिमा देहमान वेलेंटुमिला: ऊष्णकटिबंध 25 – 35 °C. मलमुएलिपुरिया: प्रसिद्धकर्ता 120-150 मि.मी. ऊष्णकटिबंध वेलेंटुमिला: 22-30 °C	**तापमान आवश्यकता**	तापमान: आदर्श 24 – 34°C. वाजब: निकासी 12++1++ मिमी पर्याप्तमात्रा सीमा आई. पेरणीकी तापमान: 22-34°C.	**मौसमीय परिस्थितियाँ**	तापमान: 22-30 °C
Land Preparation	Land Preparation: Undertake 3-4 ploughings and harrowings to achieve fine tilth. Incorporate well-decomposed FYM (farmyard manure) when preparing the land.	**भूमि की तैयारी**	भूमि की तैयारी: अच्छी तरह से उपजाऊ बनाने के लिए 3-4 बार जुताई और हैरोइंग करें। भूमि तैयार करते समय अच्छी तरह से सड़ी हुई गोबर की खाद (फार्मयार्ड मैनुअर)	**भूमितैयारी**	जमिनीनी तयारमा: जमीन सुसज्जीत होगयाकी 3-4 रोज़ जोतनी आणि कुदवणी करा. जमीन तयार करताना चांगले कुजलेले शेणखत जमिनीत मिसळा.	**जमीन तयारी**	जमीन तयार करा	**जमीन तयारी**	जमीन तयार करा	**जमीन तयारी**	जमीन तयार करा
Sowing Time	Sowing Time / Season: Sowing is recommended in February-March for early crops. In low-tained or protected cultivation, December sowing may be used for early yield.	**बुवाई का समय**	बुवाई का समयसीमा: जल्दी फसल लाने वालों के लिए फरवरी-मार्च में बुवाई की सलाह दी जाती है। कम रेशड़ वाले तरल या संरक्षित खेती में, जल्दी उपज के लिए दिसंबर में बुवाई की जा सकती है।	**बोवणीचे वेळ**	बोवणीची समय / ऋतु: पहले पक्ष बड़े ऋतुकेडी-मार्चमें बोवणी करणेची सल्ला देण्यात येते. थोडी रचना कमज़ोर संरक्षित खेतीमें, दिसंबरमें बोवणीमें पहला दिया जाएगा.	**बोवणीचे वेळ**	बोवणी वेळ	**बोवणीचे वेळ**	बोवणी वेळ	**बोवणीचे वेळ**	बोवणी वेळ
Seed rate & Spacing	Spacing / Seed Rate / Sowing Method: Spacing: Rows of width 2.5 m, seeds sown at 60 cm spacing between plants on beds. Seed rate: Approx. 1.9 kg per acre. Sowing depth: 2-3 cm.	**बुवाई की विधि/बीज दर/दूरी:** 2.5 मीटर चौड़ी क्यारी क्यारियों में बीजों के बीच 60 सेंटीमीटर की दूरी पर बीज बोए जाते हैं। बीज दर: लगभग 1.9 किलोग्राम प्रति एकड़। बुवाई की गहराई: 2-3 सेंटीमीटर।	**बीज दर मधे पेरणे**	बेड / बीज दर / बोवणी पद्धति: बेड: 2.5 मीटर चौड़ाई वाली क्यारियाँ. क्यारियों में पौधों के बीच 60 सेंटीमीटर की दूरी पर बीज बोए जाते हैं।	**बियाणे दर आणि अंतर**	बियाणे दर: अंदाजे 1.9 किलो प्रति एकर. बियाणे पेरणे खोली: 2-3 सेंटी.	**बीज मात्रा और दूरी**	बीज दर: अंदाजे 2-3 कि.ग्रा.	**बीज मात्रा और दूरी**	बीज दर: 2-3 कि.ग्रा.
Seed Treatment	Seed Treatment: Treat seeds before sowing (e.g., with suitable chemical such as Captan @ 2 g per kg seed) to protect against seed-borne diseases.	**बीज उपचार**	बीज उपचार: बीज जनित रोगों से बचाव के लिए बुवाई से पहले बीजों का उपचार करें (उदाहरण के लिए, कैप्टन जैसे उपयुक्त रसायन का प्रयोग करें, प्रति किलोग्राम बीज में 2 ग्राम की दर से)।	**बीज प्रक्रिया**	बीज प्रक्रिया: बीजांच्या रोगांचे आणि रक्षण मेलेल्या बेडवर बोवणी करणेची सल्ला देण्यात येते. (उदा.-, सीलर रसायन घेण 3 ते 4 ग्रॅम @ 2 ग्रॅम प्रति किलो बीज वापरे).	**बियाणे प्रक्रिया**	बीज प्रक्रिया	**बीज प्रक्रिया**	बीज प्रक्रिया	**बीज प्रक्रिया**	बीज प्रक्रिया
Weed Management	Fertilizer / Nutrient Management: Basal dose per acre: Urea 98 kg, SSP 125 kg, MOP 35 kg (equivalent to N 40 kg, P 20 kg, K 20 kg). Application: At land preparation apply basal; at sowing apply one third of nitrogen + full P & K, remaining N at vine growth stage.	**उर्वरक/पोषक तत्व प्रबंधन:** प्रति एकड़ आधारभूत खुराक: यूरिया 98 कि.ग्रा., एसएसपी 125 कि.ग्रा., एमओपी 35 कि.ग्रा. (जो नाइट्रोजन 40 कि.ग्रा., फास्फोरस 20 कि.ग्रा., पोटाशियम 20 कि.ग्रा. के समतुल्य है)। प्रयोग: खेत तैयार करते समय आधारभूत खुराक डालें; बुवाई के समय नाइट्रोजन का एक तिहाई भाग + फास्फोरस और पोटाशियम की पूरी मात्रा डालें, शेष नाइट्रोजन बेल की वृद्धि अवस्था में डालें।	**मोठ व खतपतवार**	मोठ / पोषक तत्वांचे व्यवस्थापन: प्रति एकर पायाभूत मात्रा: युरिया 98 किलो, एसएसपी 125 किलो, एमओपी 35 किलो (N 40 किलो, P 20 किलो, K 20 किलो समतुल्य). लेणकेल: फर्मेन्मध्ये जिमीनी शेतात लगवे नंतर एक तृतीयांश नायट्रोजन + संपूर्ण P & K, बाकी होणारे नायट्रोजन वेलीच्या विकासाच्या अवस्थेत घालावा.	**मुख्य व्यवस्थापन**	मुख्य व्यवस्थापन	**मुख्य व्यवस्थापन**	मुख्य व्यवस्थापन	**मुख्य व्यवस्थापन**	मुख्य व्यवस्थापन
Fertilizer Management	Weed Control: Use manual hoeing and/or chemical control. Example: Glyphosate @ 1.6 litre per 150 litre water for non-crop weeds.	**खरपतवार प्रबंधन**	खरपतवार नियंत्रण: हाथ से निराई-गुड़ाई और रासायनिक नियंत्रण का प्रयोग करें। उदाहरण: गैर-फसली खरपतवारों के लिए 150 लीटर पानी में 1.6 लीटर ग्लाइफोसेट का प्रयोग करें।	**मोठ व व्यवस्थेन**	मोठेचे निंदणखुरपणी आणि रासायनिक व्यवस्थेन निंदणखुरपणी केलीजाते. उदाहरण: बिन-पीक मोठेचे व्यवस्थेसाठी 150 लिटर पाण्यात 1.6 लिटर ग्लाइफोसेट.	**खत व्यवस्थापन**	खत व्यवस्थापन	**खत व्यवस्थापन**	खत व्यवस्थापन	**खत व्यवस्थापन**	खत व्यवस्थापन
Irrigation Management	Irrigation: Frequent irrigation is required in summer, approx. 10-12 irrigations during the crop cycle. First irrigation pre-sowing, then every 2-3 days initially, later every 4-5 days. Drip irrigation is advantageous. Apni Kheti	**सिंचाई प्रबंधन**	सिंचाई: गर्मियों में बार-बार सिंचाई की आवश्यकता होती है; फसल चक्र के दौरान लगभग 10-12 बार सिंचाई। पहली सिंचाई बुवाई से पहले, फिर शुरुआत में हर 2-3 दिन में, बाद में हर 4-5 दिन में। ड्रिप सिंचाई लाभदायक है। अपनी खेती	**सिंचाई व्यवस्थापन**	सिंचाई: सिंचाईचा वेळापत्रक सिंचाई पद्धती हे: पाऊ पाऊ दरमियान ब्याच 10-12 सिंचाई. पाऊची पहिला पहाव सिंचाई, नंतर शुरुवातमें दर 2-3 दिनों नंतर, पाछे दर 4-5 दिनों. ठिबक सिंचाई प्रायदायक है. अपनी खेती	**सिंचन व्यवस्थापन**	सिंचन व्यवस्थापन	**सिंचन व्यवस्थापन**	सिंचन व्यवस्थापन	**सिंचन व्यवस्थापन**	सिंचन व्यवस्थापन
Pest Management	Pest Management: Fruit flies, aphids common pests. Neem oil (@3% commonly recommended; practice crop hygiene.	**कीट प्रबंधन**	कीट प्रबंधन: फल मक्खियाँ और एफिड्स आम कीट हैं। 3% नीम का तेल आमतौर पर अनुशंसित है; फसल की स्वच्छता का पालन करें।	**पुकार व्यवस्थेन**	पुकार व्यवस्थेन: प्रामाणिकेचे: फळीच्या माश्या, पुकारत हे. नीमअनुई तेल (@3% सामान्य रीति वापरावा) शेतावर स्वच्छ ठेवे; चांगली व्यवस्थेनुं पालन करा.	**पीक व्यवस्थापन**	पीक व्यवस्थापन: फळमाशी, मावा या सामान्य कीड आहेत. सामान्यपणे: 3% कडुलिंबाच्या तेलाची शिफारस केली जाते, शेतकऱ्यांना स्वच्छतेचे पालन करा.	**पुकी नियंत्रण**	पुकी नियंत्रण	**पुकी नियंत्रण**	पुकी नियंत्रण	**पुकी नियंत्रण**	पुकी नियंत्रण
Disease Management	Disease Management: Powdery mildew managed with fungicidal sprays (carbendazim etc.); mosaic and other foliar diseases controlled via appropriate sprays and sanitation.	**रोग प्रबंधन**	रोग प्रबंधन: पाउडरी फफूंद एक (कार्बेन्डाजिम आदि) द्वारा फफूंदी नियंत्रण; मोजेक और अन्य पत्ते रोगों का नियंत्रण उपयुक्त एक और स्वच्छता के माध्यम से किया जाता है।	**रोग व्यवस्थेन**	रोग व्यवस्थेन: बुरी भारतात बुरशीचा प्रादुर्भाव (कार्बेन्डाजीम वापरून); मोजेक आणि इतर पानांवरील रोगांवर योग्य फवारणी आणि स्वच्छतेद्वारे नियंत्रण केले जाते.	**रोग व्यवस्थापन**	रोग व्यवस्थापन	**रोग व्यवस्थापन**	रोग व्यवस्थापन	**रोग व्यवस्थापन**	रोग व्यवस्थापन
Harvesting & Yield	Harvesting / Yield: The crop starts yielding about 45-50 days after sowing. Apni Kheti Typically 10-12 pickings are done. Yield: ~33-42 qt/acre.	**कटाई/उपज**	कटाई/उपज: बुवाई के लगभग 45-50 दिन बाद फसल से उपज शुरू हो जाती है। अपनी खेती: आमतौर पर 10-12 बार तुड़ाई की जाती है। उपज: लगभग 33-42 क्विंटल प्रति एकड़।	**कापणी / उत्पन्न**	कापणी / उत्पन्न: पेरणीनंतर सुमारे ४५-५० दिवसांनी पिकाला उत्पन्न सिद्ध लागते. आपली शेती: साधारणपणे १०-१२ वेळा तोडणी केली जाते. उत्पन्न: ~३३-४२ क्विंटल/एकर.	**अनुकूलन, साठवणूक**	अनुकूलन, साठवणूक	**अनुकूलन, साठवणूक**	अनुकूलन, साठवणूक	**अनुकूलन, साठवणूक**	अनुकूलन, साठवणूक
Post-Harvest Management & Storage	Post-Harvest & Handling: Harvest fruits when young & green, using sharp tool to avoid damage. Handle carefully, sort/grading for market. (Note: detailed post-harvest handling may need to be adapted locally.)	**फसल कटाई के बाद का प्रबंधन और भंडारण**	कटाई के बाद और रखरखाव: फलों को कच्चा और हरा होने पर ही तोड़ें, क्षति से बचने के लिए तेज औजारों का उपयोग करें। सावधानीपूर्वक संभालें, बाजार के लिए छांटें/श्रेणी बनाएं। (नोट: कटाई के बाद के विस्तृत रखरखाव में स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार बदलाव की आवश्यकता हो सकती है।)	**कापणी नंतरचे व्यवस्थेन आणि साठवणूक**	कापणीनंतरची काळजी आणि हाताळणी: फळे योग्यवेळी आणि हिरवी असताना काढावीत; इजा टाळण्यासाठी धारदार अवजारांचा वापर करावा. काळजीपूर्वक हाताळावीत आणि बाजारासाठी त्यांची वर्गवारी/श्रेणीवार करावी. (टीप: काढणीनंतरच्या तपशिलवार हाताळणीमध्ये स्थानिक परिस्थितीनुसार बदल करण्याची आवश्यकता असू शकते.)	**अनुकूलन, साठवणूक आणि साठवणूक**	अनुकूलन, साठवणूक	**अनुकूलन, साठवणूक**	अनुकूलन, साठवणूक	**अनुकूलन, साठवणूक**	अनुकूलन, साठवणूक
Disclaimer	The recommendations are based on SAUs, government agencies, and trial centers. Actual results may vary depending on soil type, climate, variety, and crop management practices.	**अस्वीकरण**	ये सिफारिशें एसएयू, सरकारी एजेंसियों और परीक्षण केंद्रों पर आधारित हैं। वास्तविक परिणाम मिट्टी के प्रकार, जलवायु, किस्म और फसल प्रबंधन पद्धतियों के आधार पर भिन्न हो सकते हैं।	**नकारीलेलू**	ఈ సిఫారసులు SAU, ప్రభుత్వ సంస్థలు మరియు ట్రయల్ కేంద్రాల ఆధారంగా ఉన్నాయి. వాస్తవ ఫలితాలు నేల రకం, వాతావరణం, రకం మరియు పంట నిర్వహణ పద్ధతులను బట్టి మారవచ్చు.	**अस्वीकरण**	या शिफारशी एसएयू, सरकारी संस्था आणि चाचणी केंद्रांवर आधारित आहेत. वास्तव परिणाम जमीनीचा प्रकार, हवामान, वाण आणि पीक व्यवस्थापन पद्धतींच्या आधारे बदलू शकतात.	**अस्वीकरण**	अस्वीकरण	**अस्वीकरण**	अस्वीकरण	**अस्वीकरण**	अस्वीकरण